द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0.0 प्रस्तावना

प्रथम अध्याय में शोध उद्देश्य, शोध आवश्यकताओं की चर्चाऐं की गई। प्रस्तुत अध्याय में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन के बारे में चर्चा की गई है।

2.1.0 साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व

- ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां पर है।
- जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
- पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
- पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के निष्कर्ष और उसके निष्कर्ष मिलाने में मदद मिलती है।
- संबंधित साहित्य की समीक्षा करने का अंतिम व महत्वपूर्ण विशेष कारण यह जानना भी है कि पिछले अनुसंधायक ने अपने अध्ययन में और आगे अनुसंधान के लिये क्या कहा है।

2.2.0 पूर्व शोध आंकलन

शोध की वर्तमान स्थिति को जानने के लिये शोधकर्ता ने अध्यापक शिक्षा के शोध कार्य के विभिन्न स्त्रोतों का अध्ययन किया।

शोधकर्ता के शोध के विषय से संबंधित पूर्व में किये गये शोध कार्य निम्नलिखित हैं।

बोस एवं मोएत्रा (1965) ने पश्चिम बंगाल के विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया तथा पाठ्यपुस्तकों को ओर अधिक रूचिकर बनाने के लिये सुझाव दिये।

एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली (1970-72) के पाठ्यपुस्तक विभाग द्वारा पाठ्यपुस्तकों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया। उसमें अलग-अलग नौ अध्ययन किये गये जिसमें मातृभाषा, द्वितीय भाषा, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, भौतिक तथा जीव विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने और उनका मूल्यांकन करने के लिये सिद्धातों तथा विधियों को विकसित किया गया।

कोहली (1974) ने A critical evaluation of curriculum for Teacher education of B.Ed. level in Punjab का शोध-अध्ययन किया था। प्रस्तुत शोध-अध्ययन में पंजाब राज्य की 15 महाविद्यालय को न्यादर्श के लिये चुना गया था। प्रदत्तों संकलन के लिये प्रश्नावली, साक्षात्कार और निरीक्षण जैसे उपकरण एवं तकनीकी का प्रयोग किया गया था। इस शोध के अंतर्गत सत्रीय कार्य, प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक कार्य, वैकल्पिक प्रश्नपत्र के प्रति अध्ययन किया है।

गोपालकृष्णन (1977) ने "A critical analysis of the new mathematics syllabus and text books used in the upper primary classes in Kerala" का शोध-अध्ययन किया था। प्रस्तुत शोधकार्य में गणित पाठ्यक्रम का विश्लेषण किया गया है। इसमें प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के द्वारा अध्ययन किया गया है। न्यादर्श में 1500 शिक्षक जो 250 स्कूल

में से पसंद किये गये। साक्षात्कार में माता–पिता, विद्यार्थियों, शिक्षाविद् और शिक्षकों से किया गया। इस अध्ययन में देखा गया कि केरला का पाठ्यक्रम एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम से अलग है।

शर्मा (1982) ने "A study of the foundational course prescribed for B.Ed. degree of Indian Universities" का शोध–अध्ययन किया था। प्रस्तुत शोधअध्ययन में 2500 न्यादर्श लिये गये हैं। जिसमें प्रशिक्षण विद्यार्थियों एवं शिक्षकों, आचार्यो को लिया गया है। इस शोध अध्ययन में प्रश्नावली एवं चेकलिस्ट का प्रयोग किया गया है। परसन्टेज, गिलफोर्ड का डिफरन्ट फार्मूला एवं K-R20 फार्मूला का प्रयोग किया गया है।

भाटिया (1987) ने "Evaluation of new B.Ed. curriculum in the colleges of education affiliated to the university of Bombay" का शोध–अध्ययन किया था। प्रस्तुत शोध–अध्ययन सर्वे पद्धति से किया गया है। जिसमें मुंबई विश्वविद्यालय के पुराने एवं नये बी.एड. पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध न्यादर्श में 64 शिक्षा–शिक्षक, 600 प्रशिक्षित शिक्षक, 20 पुराने विद्यार्थियों, 9 आचार्य जो, 13 शिक्षा महाविद्यालय से लिये गये थे। प्रदत्तों के संग्रह के लिये प्रश्नावली, साक्षात्कार, चेक लिस्ट, ग्रुप–डिस्कशन, निरीक्षण आदि का प्रयोग किया है। शोधसार के अंतर्गत यह देखने को मिला कि कुछ महत्व के परिवर्तन बी.एड. के नये पाठ्यक्रम में हुए हैं।

खांडेकर (1999) द्वारा स्नातक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया गया। स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय के पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्यों का शोध करना, हिन्दी

पाठ्यपुस्तक की क्षमता एवं कमियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना इन उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर उपरोक्त अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में निम्न निष्कर्ष पाए गए – पाठ्यक्रम में शैक्षिक मूल्यों का प्रतिशत औसत से कम पाया गया। पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु में शैक्षिक मूल्यों के प्रति सार्थकता पायी गयी।

श्रीवास्तव (2001) ने "Evaluation under the school experience program in the Two-year bachelor of education curriculum" का शोध–अध्ययन किया था। प्रस्तुत शोध अध्ययन दो साल के बी.एड. में होने वाले स्कूल अनुभव प्रोग्राम के ऊपर है। इनमें तीन प्रकार के विस्तार के प्रति ध्यान दिया है।

1. The outcomes of the Teaching.
2. The learning behaviours of experience of pupils that the teaching provides.
3. The behaviours of the teacher while teaching.

प्रमुखतः निर्देशन एवं रेटिंग स्केल के आधार पर यह अध्ययन किया गया है। न्यादर्श में 113 स्कूल शिक्षकों, 36 शैक्षिक शिक्षक, आचार्य एवं 15 विशेषज्ञ।

मेहोड़ (2004) ने "कक्षा आठवीं की विज्ञान पाठ्यपुस्तक का वैज्ञानिक मूल्यों के प्रति विश्लेषणात्मक अध्ययन" का शोध किया था। प्रस्तुत शोधकार्य में कक्षा आठवीं की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण किया गया है। यह पाठ्यपुस्तक मराठी माध्यम की है। इसमें विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में वैज्ञानिक मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। इस कार्य हेतु महाराष्ट्र राज्य में अमरावनी जिला के तालूका चांदूर का चयन किया गया। इस अध्ययन में 10 वैज्ञानिक

मूल्यों का चयन कर उन्हें विज्ञान विषय की पाठ्यवस्तु के संदर्भ में विश्लेषित किया गया।

मिश्रा (2006) ने "कक्षा सातवीं की विज्ञान पाठ्यपुस्तक का पर्यावरणीय मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन" किया। प्रस्तुत शोधकार्य में कक्षा सातवीं की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण किया गया है। यह पाठ्यपुस्तक हिन्दी माध्यम की है। इसमें विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में पर्यावरणीय मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। इस कार्य हेतु मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल शहर के छः शासकीय तथा आठ अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है। इस अध्ययन में विश्लेषण एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके पाठ्यपुस्तक का पर्यावरणीय मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषित किया गया।

2.3.0 उपसंहार

बोस एवं मोएत्रा (1965) पाठ्यपुस्तकों को ओर अधिक रूचिकर बनाने के लिये सुझाव दिये। मिश्रा (2006) का अध्ययन में विश्लेषण एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके पाठ्यपुस्तक का पर्यावरणीय मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषित किया गया। मेहोड़ (2004) का अध्ययन में 10 वैज्ञानिक मूल्यों का चयन कर उन्हें विज्ञान विषय की पाठ्यवस्तु के संदर्भ में विश्लेषित किया गया। खांडेकर (1999) का अध्ययन में पाठ्यक्रम में शैक्षिक मूल्यों का प्रतिशत औसत से कम पाया गया। पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु में शैक्षिक मूल्यों के प्रति सार्थकता पायी गयी। एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली (1970–72) ने मातृभाषा, द्वितीय भाषा, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, भौतिक तथा जीव विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने और उनका मूल्यांकन करने

के लिये सिद्धातों तथा विधियों को विकसित किया। भाटिया (1987) कुछ महत्व के परिवर्तन बी.एड. के नये पाठ्यक्रम में हुए हैं। गोपालकृष्णन (1977) ने कहा की केरला का पाठ्यक्रम एन. सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम से अलग है।